

सूट स्पेशलिस्ट
फेअर डील

टेलर्स

ब्लेजर कोट, सफारी
एवं पेन्ट-शर्ट

12, सुभाष मार्ग, इन्दौर
फोन 2541474

प्रोफ़. अशरफ खान मेव

सिद्धारमैया ने सीएम पद से दिया इस्तीफा

आलाकमान ने जो कहा वो किया

सिद्धारमैया ने कर्नाटक के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया, जिससे कांग्रेस में कई दिनों से चल रही खींचतान का अंत हो गया। सिद्धारमैया ने कहा कि कांग्रेस ने उन्हें पद छोड़ने के लिए कहा है ताकि उनके उप मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार को मुख्यमंत्री पद पर पदोन्नत किया जा सके। यह घटनाक्रम सिद्धारमैया द्वारा कैबिनेट सहयोगियों के साथ नाश्ते पर हुई बैठक के कुछ ही घंटों बाद सामने आया है, जिसमें शिवकुमार भी उपस्थित थे, और जिसमें उन्होंने अपने पद से इस्तीफा देने का निर्णय लिया था।

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया

ने कर्नाटक के राज्यपाल के विशेष सचिव प्रभु शंकर को अपना इस्तीफा सौंप दिया है। राज्यपाल थावरचंद गहलोट, जो राज्य से बाहर हैं, आज रात लौट रहे हैं। सिद्धारमैया ने पत्रकारों से कहा कि मुझे विश्वास है कि राज्यपाल के वापस आने पर वे मेरा इस्तीफा स्वीकार कर लेंगे। उन्होंने कहा कि मैंने आज अपना इस्तीफा सौंप दिया है, इससे पहले हाई कमांड ने मुझे इस्तीफा देने के लिए कहा था। मुझे पूरा विश्वास है कि राज्यपाल के आने पर वे इसे स्वीकार कर लेंगे, क्योंकि संविधान के अनुसार ऐसा करना आवश्यक है।

उन्होंने आगे कहा कि हमारे पास पूर्ण बहुमत है। इसलिए, मुख्यमंत्री को सरकार बनाने की अनुमति देना संवैधानिक



रूप से उचित है। मैं सोनिया गांधी, राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे का हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जिन्होंने मुझे यह अवसर प्रदान किया। सिद्धारमैया ने कहा कि कर्नाटक के

लिए संवैधानिक तरीकों से नए मुख्यमंत्री का चुनाव करना होगा। उन्होंने पत्रकारों से कहा कि मेरा मानना है कि संविधान हमारा धर्म है और मतदाता हमारे देवता और भक्त हैं। मुझे दो बार मुख्यमंत्री बनने और दो बार विपक्ष का नेता बनने का मौका मिला।

राज्यपाल द्वारा इस्तीफे को स्वीकार करने या न करने के सवाल पर निवर्तमान मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्यपाल की भी कुछ संवैधानिक जिम्मेदारियां होती हैं जिनका उन्हें पालन करना चाहिए। कांग्रेस नेता ने कहा कि मैं एक गाँव से आया हूँ। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं विधायक, मंत्री या

मुख्यमंत्री बनूँगा। राजनीति में मेरा प्रवेश संयोगवश हुआ। मेरे माता-पिता या मेरे परिवार का कोई भी सदस्य राजनीति से जुड़ा हुआ है। सिद्धारमैया ने आगे कहा कि मैं बुद्ध, अंबेडकर और बसवा के आदर्शों में विश्वास रखता हूँ। मैं संविधान में विश्वास रखता हूँ। मेरा मानना है कि सभी जाति, धर्म और समुदायों को एक साथ रहना चाहिए। मेरा यह भी मानना है कि धन का समान वितरण होना चाहिए। इसीलिए बुद्ध, बसवा, गांधी और अंबेडकर की शिक्षाएँ मेरी राजनीति की जड़ रही हैं... मेरा मानना है कि एक समतावादी समाज होना चाहिए और सभी को समान अधिकार मिलने चाहिए।



ममता की टीएमसी में बड़ी बगावत! काकोली घोष के 24 घंटे बाद शांतनु सेन ने भी छोड़ा पार्टी पद

तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के नेता और पूर्व राज्यसभा सांसद डॉ. शांतनु सेन ने पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता पद से इस्तीफा दे दिया। यह घटनाक्रम ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली पार्टी की काकोली दस्तीदार घोष द्वारा अपने सभी पदों से इस्तीफा देने के एक दिन बाद सामने आया है। 2024 के आरजी कर बलात्कार-हत्या मामले और भ्रष्टाचार का हवाला देते हुए, शांतनु सेन ने पार्टी अध्यक्ष ममता बनर्जी को संबोधित अपने इस्तीफे में कहा कि वे अब अनैतिक कृत्यों पर पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता के रूप में समर्थन देने के लिए तैयार नहीं हैं। एएनआई समाचार एजेंसी द्वारा साझा किए गए इस्तीफे में यह कहा गया कि मुश्किल दौर में मैं अलग-अलग विचारों से सहमत नहीं था, फिर भी मैंने कई विवादास्पद मुद्दों पर मीडिया में पार्टी के लिए खुलकर आवाज उठाई, जिसके लिए आम जनता ने अक्सर मेरी प्रशंसा की है। लेकिन मौजूदा हालात में, जब बंगाल की जनता ने आरजी कर मामले, अभया मामले और नौकरी के बदले रिश्तखोरी जैसे कई अनैतिक कृत्यों और भ्रष्टाचार के कारण हमें नकार दिया है, तो अब मेरा मन किसी भी तरह से प्रवक्ता के रूप में उनका समर्थन करने को तैयार नहीं है। इसलिए, जनता के फैसले को ध्यान में रखते हुए, मैं तृणमूल कांग्रेस के

अखिल भारतीय प्रवक्ता पद से इस्तीफा देना चाहता हूँ। कृपया मेरा इस्तीफा स्वीकार करें और उसका सम्मान करें। हालांकि कई मुश्किल दौर में मैं अलग-अलग विचारों से सहमत नहीं था, फिर भी मैंने कई विवादास्पद मुद्दों पर मीडिया में पार्टी के लिए खुलकर आवाज उठाई, जिसके लिए आम जनता ने अक्सर मेरी प्रशंसा की है। लेकिन



मौजूदा हालात में, जब बंगाल की जनता ने आरजी कर मामले, अभया मामले और नौकरी के बदले रिश्तखोरी जैसे कई अनैतिक कृत्यों और भ्रष्टाचार के कारण हमें नकार दिया है, तो अब मेरा मन किसी भी तरह से प्रवक्ता के रूप में उनका समर्थन करने को तैयार नहीं है। इसलिए, जनता के फैसले को ध्यान में रखते हुए, मैं तृणमूल कांग्रेस के अखिल भारतीय प्रवक्ता पद से इस्तीफा देना चाहता हूँ। कृपया मेरा इस्तीफा स्वीकार करें और उसका सम्मान करें। एक दिन पहले, टीएमसी सांसद काकोली घोष दस्तीदार ने पार्टी की महिला शाखा के प्रमुख पद से इस्तीफा दे दिया था।

अपने इस्तीफे पत्र में उन्होंने कहा कि पार्टी उन्हें एक साथी सांसद के दुर्व्यवहार से बचाने में विफल रही, जिसका उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से बनर्जी की ओर इशारा करते हुए जिक्र किया था। बनर्जी ने लोकसभा में तृणमूल कांग्रेस के मुख्य सचेतक के पद से भी उन्हें हटा दिया था। जहां एक ओर घोष दस्तीदार ने प्रमुख संगठनात्मक पदों से इस्तीफा देकर पार्टी से अपनी दूरी बढ़ा ली है, वहीं दूसरी ओर उनके सहयोगी कल्याण बनर्जी के खिलाफ दायर शिकायत ने संकटग्रस्त तृणमूल कांग्रेस के भीतर आंतरिक उथल-पुथल में एक नया मोर्चा खोल दिया है।

पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली टीएमसी हाल ही में संपन्न हुए पश्चिम बंगाल चुनाव 2026 में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के हाथों सत्ता से बाहर हो गई, जिसने भारी बहुमत से जीत हासिल की। भाजपा ने 4 मई को हुई मतगणना में शामिल 293 सीटों में से 207 सीटें जीतीं और फाल्टा निर्वाचन क्षेत्र भी अपने नाम किया, जहां 21 मई को पुनर्मतदान हुआ था। काकोली घोष दस्तीदार ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से पार्टी सहयोगी कल्याण बनर्जी के खिलाफ महिला विरोधी सोच और बार-बार मौखिक दुर्व्यवहार के आरोप लगाते हुए औपचारिक शिकायत दर्ज करने की अनुमति मांगी।

जल संरक्षण को बनाये जन आंदोलन : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल : मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत प्राचीन अहिल्या कुंड के जीर्णोद्धार कार्य का निरीक्षण किया। इस अवसर पर उन्होंने विधिविधान से पूजा-अर्चना भी की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए सभी से जल संरक्षण को जन आंदोलन बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जल केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार है। जल बचा कर भावी पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित किया जा सकता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने संत कबीरदास एवं संत रहीम के दोहों का उल्लेख करते हुए जल की महत्ता को सरल एवं प्रेरणादायी ढंग से समझाया। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में जल को

जीवन, संवेदना और समृद्धि का प्रतीक माना गया है। उन्होंने ग्रामीणों से वर्षा जल संरक्षण, तालाबों और कुंडों के संरक्षण तथा जल के विवेकपूर्ण उपयोग का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि राज्य शासन जल संरक्षण के लिए निरंतर कार्य कर रही है और जल गंगा संवर्धन अभियान से पारंपरिक जल स्रोतों के पुनर्जीवन का व्यापक अभियान चलाया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जनसहभागिता से ही जल संरक्षण के प्रयास सफल होंगे और आने वाले समय में प्रदेश जल समृद्धि की दिशा में नई पहचान बनाएगा। निरीक्षण के दौरान जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, सांसद श्री शंकर लालवानी, विधायक श्री गोलू शुक्ला, श्री गौरव रणदिवे, श्री श्रवण सिंह चावड़ा सहित अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

विशेष



समाज सेवा खाली हाथ नहीं होती, जेब ढीली करनी पड़ती है

आज के दौर में समाज सेवा एक ऐसा मुबारक काम बन गया है, जिसकी चर्चा तो हर महफिल में होती है, मगर जब बात अमल की आती है तो लोग बड़ी नफासत से अपना हाथ जेब से दूर रख लेते हैं। हर शख्स चाहता है कि समाज का इस्लाह हो, गरीबों की मदद हो, तालीम का फ़रोग हो, बीमारों का इलाज हो, मगर यह सब किसी और के पैसों से हो। अपनी जेब पर आंच आए, यह मंजूर नहीं।

हमारे शहर में एक साहब हैं। समाज सेवा पर उनके खुबे इतने असरदार होते हैं कि सुनने वाला समझे अभी उठकर दुनिया बदल देंगे। हर जलसे में वे फ़रमाते हैं, 'हमें समाज के लिए कुर्बानी देनी होगी।' लेकिन जैसे ही चंदे की रसीद उनकी तरफ़ बढ़ाई जाती है, उनका चेहरा ऐसा हो जाता है जैसे किसी ने बिजली का बिल थमा दिया हो। फ़ौरन फ़रमाते हैं, 'जनाब, मेरी दुआएँ आपके साथ हैं।' गोया दुआएँ ही अब नई करेंसी बन गई हैं।

एक ज़माना था जब लोग खुलूस और मोहब्बत से समाज सेवा करते थे। कोई स्कूल बनवा देता था, कोई कुआँ खुदवा देता था, कोई यतीमों की मदद कर देता था। आज समाज सेवा की तस्वीर कुछ बदली-बदली नज़र आती है। अब पहले फ़ोटो खिंचती है, फिर पोस्ट सोशल मीडिया पर जाती है और उसके बाद मदद के बारे में सोचा जाता है। दस रुपये की मदद और सौ रुपये का प्रचार—यही नया उसूल है।

कई लोग समाज सेवा को ऐसी चीज़ समझते हैं जैसे शादी में शिरकत करना। बस पहुँचिए, मुस्कुराइए, दो बातें कीजिए और वापस आ जाइए। मगर हकीकत यह है कि समाज सेवा सिर्फ़ तालियों और तक़रीरों से नहीं चलती। इसके लिए वक्त भी देना पड़ता है और ज़रूरत पड़ने पर जेब भी ढीली करनी पड़ती है।

एक बार एक संस्था ने निर्धन बच्चों की तालीम के लिए चंदा इकट्ठा करने की मुहिम चलाई। लोग आए, बड़ी-बड़ी तक़रीरें हुईं, समाज सुधार के नारे लगे। मगर जब चंदे की बारी आई तो कुछ लोग मोबाइल देखने लगे, कुछ पानी पीने चले गए और कुछ को अचानक कोई बहुत ज़रूरी काम याद आ गया। ऐसा लगता था जैसे चंदे का डिब्बा नहीं, कोई ख़तरनाक बीमारी घूम रही हो जिससे सब बचना चाहते हों।

दरअसल, समाज सेवा एक ऐसा कार-ए-खैर है जिसमें सिर्फ़ जज़्बात नहीं, ज़रियात भी चाहिए। स्कूल बनाना हो, अस्पताल चलाना हो, गरीब की मदद करनी हो या किसी मुसीबतज़दा परिवार का सहारा बनना हो—हर जगह कुछ न कुछ आर्थिक सहयोग की ज़रूरत पड़ती है। खाली हाथ की दुआएँ अपनी जगह क़ीमती हैं, मगर दुआ के साथ अगर मदद का हाथ और कुछ रुपयों का सहारा भी जुड़ जाए तो उसका असर कहीं ज़्यादा होता है।

आज समाज को ऐसे लोगों की ज़रूरत है जो सिर्फ़ मशवरे न दें, बल्कि अपनी हैसियत के मुताबिक़ हिस्सा भी अदा करें। आख़िर समाज सेवा कोई जादू नहीं कि हवा में हो जाए। इसके लिए दिल में दर्द, नीयत में खुलूस और जेब में थोड़ी सी ख़ादारी भी चाहिए।

इसलिए अगली बार जब समाज सेवा की बात हो तो सिर्फ़ तालियाँ बजाने या नसीहत करने पर इत्किफ़ा न कीजिए। याद रखिए, समाज सेवा सचमुच खाली हाथ नहीं होती; उसके लिए कभी-कभी जेब भी ढीली करनी पड़ती है। और शायद यही वह कुर्बानी है जो समाज को बेहतर बनाने की बुनियाद रखती है।

मो. अय्यूब खान मेव
(एबी स्टीचिंग)

हमारे जीवन में इल्म (ज्ञान) की अहमियत और नूर

'इकरा': रब्ब का पहला हुक्म और इल्म की सरपरस्ती

इंसानी ज़िंदगी की कामयाबी, तहज़ीब और अख़लाक़ का दारोमदार सिर्फ़ और सिर्फ़ 'इल्म (ज्ञान)' पर है। दुनिया में इंसान को अशरफ़ुल मख़लूक़ात (सृष्टि में सबसे श्रेष्ठ) बनाया गया है, और उसे यह मर्तबा किसी दौलत या जिस्मानी ताक़त की वजह से नहीं, बल्कि इल्म की वजह से मिला है।

जब हम इस्लाम के मुक़द्दस पैग़ाम और अल्लाह तआला की आख़िरी किताब, कुरआन मजीद पर ग़ौर करते हैं, तो यह बात पूरी तरह साफ़ हो जाती है कि इंसानियत को सुधारने के लिए सबसे पहला शऊर क्या दिया गया था।

ग़ार-ए-हिया में जब अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर पहली वही नाज़िल हुई, तो अल्लाह तआला ने न तो नमाज़ का हुक्म दिया, न रोज़े का, और न ही किसी और इबादत का। अल्लाह तआला ने सबसे पहला लफ़्ज़ जो नाज़िल फ़रमाया, वह था "इकरा" यानी 'पढ़ो'।

'इकरा बिस्मी रब्बिकल लज़ी ख़लक़, '(पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया (सूरह अल-अलक़: 1)

यह 'सूरह अल-अलक़' की शुरुआती आयतें थीं, जिन्हें 'इकरा सूरत' के नाम से भी जाना जाता है। इस सूरह का नाज़िल होना इस बात का खुला सुबूत है कि इस्लाम की बुनियाद ही इल्म, तदबुुर (चिंतन), और तालीम पर रखी गई है। अल्लाह तआला ने पढ़ने का हुक्म देकर इंसान को ज़हालत (अज्ञानता) के अंधेरों से निकालकर हिदायत और शऊर के उजाले की तरफ़ चलने का रास्ता दिखाया।

यदि रब्ब से मांगना हो, तो सिर्फ़ 'इल्म' मांगें अक्सर इंसान अपनी दुआओं में दुनियावी चीज़ें, जैसे- बहुत सारा माल-ओ-दौलत, आलीशान मकान, बड़ी गाड़ियाँ और शोहरत मांगता है। लेकिन हकीकत यह है कि ये सब चीज़ें आरज़ी हैं।

कुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने अपने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सिर्फ़ एक चीज़ में इज़ाफ़े (बढ़ोत्तरी) की दुआ मांगने की ताकीद फ़रमाई है, और वह चीज़ इल्म है:

'रब्बी ज़िदनी इल्मा' (ऐ मेरे रब, मेरे इल्म में इज़ाफ़ा फ़रमा (सूरह ताहा: 114)

अल्लाह तआला ने अपने नबी से यह नहीं कहलवाया कि 'ऐ मेरे रब, मेरे माल में इज़ाफ़ा कर' या 'मेरी शोहरत बढ़ा', बल्कि फ़रमाया कि 'मेरे इल्म में इज़ाफ़ा कर।'

जब आप अल्लाह तआला से सच्चे दिल से इल्म मांगते हैं, तो आप असल में कायनात की सबसे बड़ी दौलत मांग रहे होते हैं। इल्म एक ऐसा नूर है जो इंसान के ज़हन को खोलता है, सही और ग़लत का फ़र्क़ समझाता है, और इंसान को अल्लाह के नज़दीक लाता है।

इल्म के साथ दौलत और शोहरत का फ़लसफ़ा कहा जाता है कि 'इल्म बादशाहों पर हुकूमत करता है और दौलत पर पहरा देना पड़ता है।'

यदि आपके पास इल्म है, तो शोहरत और दौलत आपके पीछे खुद-ब-खुद खिंची चली आएंगी। इसकी वजह बेहद साफ़ और मतिफ़ी (Logical) है: इल्म सही रास्ते दिखाता है: एक जाहिल (अज्ञानी) इंसान अगर बहुत सारा पैसा पा भी ले, तो वह अपनी नासमझी से उसे बहुत जल्द बर्बाद कर देगा। लेकिन एक बा-इल्म (ज्ञानी) इंसान जानता है कि दौलत कैसे कमायी है, उसे कहाँ खर्च करना है और उसे कैसे बढ़ाना है। इल्म कभी चोरी नहीं हो सकता: दौलत को तिजोरी में बंद करके रखना पड़ता है, हमेशा चोरी होने का डर रहता है। लेकिन इल्म इंसान के दिमाग़ और रूह में बसता है, इसे कोई चुरा नहीं सकता। यह बांटने से और बढ़ता है।

सच्ची शोहरत इल्म से मिलती है: दुनिया में इतिहास गवाह है कि बड़े-बड़े अमीर और बादशाह आए और चले गए, आज उनका नाम लेने वाला कोई नहीं है। लेकिन सदियाँ गुज़र जाने के बाद भी इमाम बुख़ारी, इब्ने सीना, अल-ख़्वारिज़्मी और अल्लामा इक़्बाल जैसे बा-इल्म लोगों का नाम आज भी अदब और एहताराम से लिया जाता है। इनकी शोहरत कभी ख़त्म नहीं होने वाली।

जब आप अल्लाह से इल्म मांग लेते हैं, तो रब्ब आपको वह समझ और हुनर अता कर देता है जिससे दुनिया की तमाम नेमतें आपके क़दमों में आ जाती हैं।

इल्म के दो पहलू: दीन और दुनिया: इस्लाम में इल्म को दो हिस्सों में नहीं बांटा गया कि दीन का इल्म अलग है और दुनिया

का अलग। बल्कि इस्लाम हर उस इल्म को हासिल करने की दावत देता है जो इंसानियत के भले के लिए हो।

1. दीनी इल्म (Religious Knowledge): यह इंसान को उसके पैदा करने वाले रब्ब से जोड़ता है। यह हमें सिखाता है कि हमें ज़िंदगी कैसे गुज़ारनी है, बंदों के हक़ूक़ (अधिकार) क्या हैं, और आख़रित (Afterlife) की कामयाबी कैसे हासिल करनी है।

2. दुनियावी इल्म (Secular Knowledge): साइंस, टेक्नोलॉजी, मेडिसिन, इतिहास और गणित का इल्म। यह इल्म इंसान को अल्लाह की बनाई हुई कायनात पर ग़ौर करने का मौक़ा देता है। जब एक डॉक्टर किसी मरीज़ का इलाज करता है या एक इंजीनियर कोई पुल बनाता है, तो वह भी इंसानियत की ख़दिमत और अल्लाह की इबादत का ही एक हिस्सा बन जाता है।

हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) का एक बेहद मशहूर क़ौल है। 'इल्म माल से बेहतर है, क्योंकि इल्म तुम्हारी हिफ़ाज़त करता है और माल की हिफ़ाज़त तुम्हें करनी पड़ती है। (इल्म ज़िंदगी का नूर है और ज़हालत सबसे बड़ा अंधेरा है।)

(कुरआन मजीद की पहली वही 'इकरा' यानी पढ़ने के हुक्म से शुरू हुई। और अल्लाह से जब भी मांगो, इल्म मांगो, क्योंकि इल्म के पीछे शोहरत और दौलत खुद चली आती है। और इल्म इंसान की हिफ़ाज़त करता है जबकि दौलत की हिफ़ाज़त इंसान को करनी पड़ती है।

समाज के नाम पैग़ाम: आज हमारे मुआशरे (समाज) में सबसे बड़ी कमी यह हो गई है कि हमने तालीम (Education) का मक़सद सिर्फ़ एक अच्छी नौकरी या पैसा कमाना समझ लिया है। यही वजह है कि डिग्रियाँ होने के बावजूद समाज में अख़लाक़ और तहज़ीब की कमी दिखाई देती है। हमें अपनी सोच को बदलना होगा। हमें अपनी आने वाली नस्लों को यह सिखाना होगा कि इल्म हासिल करने का मक़सद इंसान बनना है, सिर्फ़ अमीर बनना नहीं। जब हमारे बच्चे बा-इल्म, बा-किरदार और बा-अख़लाक़ होंगे, तो तरक्की, इज़्ज़त, शौहरत और दौलत उनके मुक़द्दर में खुद लिख दी जाएगी। आइए, आज हम सब मिलकर यह अहद (संकल्प) करें कि हम अपनी ज़िंदगी में इल्म की शमा को रौशन रखेंगे, सूरह अल-अलक़ ('इकरा') के पैग़ाम को अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बनाएंगे, और हमेशा अल्लाह से दुआ करेंगे: 'ऐ हमारे रब्ब! हमारे इल्म में इज़ाफ़ा फ़रमा और हमें इस इल्म के ज़रिये इंसानियत की ख़दिमत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।'आमीन सुम्मा अमीन

विश्लेषण / विशेष लेख : मुहम्मद शारिब खान
हार्डकोर्ट एडवोकेट ट्यूबर (7869786317)

जय ईरान, तय ईरान

1-जिस देश के लकड़हारे,गड़रिया और देहातीदुश्मन के जहाजों और सैना पर फायरिंग कर रहे हों।

2-जिस देश की बेटियाँ 90 प्रतिशत साक्षर और 65 प्रतिशत डाक्टर,इंजीनियर और टेक्नीकली हों।

3-जिस देश की बड़ी लीडरशिप सैना के बड़े ऑफिसर पहले ही दिन शहीद हो गए हों और वो पूरी ताक़त से दुश्मन का मुक़ाबला कर रहो।

4- जिस देश की जनता अपने देश के पुलों,पावर व ऊर्जा प्लांट,सड़कों और ऐतिहासिक धरोहरों को बचाने के लिए शहीद होने लिए चैन बनाकर खड़ी हो।

5-जिस देश के नेता,कलाकार, संगीतकार, खिलाड़ी और किसान शहादत को तैयार हों।

6-जो देश बंमबारी,बर्बादी,नरसंहार और दुनिया की महाशक्ति सामने एकजुट खड़ा हो।

उस देश को कोई कैसे पराजित कर सकता है। वह देश तो उन लोगों के लिए एक प्रेरणा है जहाँ के कट्टरपंथी ,नरसंहार, सिविलवार और नफरत की आवाज बुलंद करते रहते हैं। इससे सिद्ध होता है कि एकता में ही शक्ति है। निज स्वार्थ और राजनैतिक फायदे के लिए समाज को बांटने और एकता को तोड़ना महापाप ही नहीं देश के साथ विश्वासघात भी है।

-सिद्दीक अहमद मेव

मेव कमेटी के द्वारा शिक्षा सम्मान समारोह एवं मोटिवेशनल सेमिनार का हुआ आयोजन



देवास : कल कन्नौद के लक्ष्मी पैलेस गार्डन में मेव सोशल वेलफेयर एक्टिविटीज कमेटी के द्वारा आयोजित शिक्षा सम्मान समारोह एवं मोटिवेशनल सेमिनार में कन्नौद, खातेगांव, सतवास तहसील के सभी धर्मों के हर वर्ग के लगभग 170 बच्चों को सम्मानित किया गया। प्रोग्राम में कन्नौद, सतवास, खातेगांव के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में बच्चों के साथ पैरेंट्स और समाजजन उपस्थित हुए।

तेज गर्मी में होने के बावजूद बच्चों के साथ पैरेंट्स पूरी एनर्जी के साथ प्रोग्राम के अंत तक उपस्थित रहे। मेव कमेटी के द्वारा कन्नौद, खातेगांव, सतवास के सभी धर्मों के लगभग 170 बच्चों के साथ उनके पैरेंट्स को मोमेंटो सर्टिफिकेट देकर और माला पहनकर सम्मानित किया गया। प्रोग्राम का मकसद बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में मोटिवेट कर आगे बढ़ना था। सेमिनार में उपस्थित सभी मेहमानों के भोजन की व्यवस्था कमेटी के द्वारा की गई। प्रोग्राम में मुख्य अतिथि। पं. श्री आशीषजी शर्मा (क्षेत्रीय विधायक) कन्नौद (म.प्र.), असगर मेव प्रदेश अध्यक्ष मुस्लिम मेव सामाजिक संगठन, श्री कैलाशजी कुंडल (पूर्व विधायक) कन्नौद (म.प्र.), रमजान खान जिला पंचायत सदस्य एवं जनपद पंचायत उपाध्यक्ष कन्नौद, पार्षद समाजसेवी फारुख भाई केलेवाले



का, पार्षद संजय शर्मा, SDOP आदित्य तिवारी सर कन्नौद के अलावा बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित हुए। इस कड़ी में मोटिवेशनल विशेष वक्त याकूब मेमन अध्यक्ष-माइनॉरिटी स्कूल एसोकेटोन मप्र, प्रोफेसर डॉ. असद खान (आई. के. कॉलेज, इन्दौर) ओसीडी डीएवीवी यूनिवर्सिटी, इन्दौर, आईटी सेल टीम का जिन्होंने बच्चों को मोटिवेट कर प्रोग्राम की सफलता में चार चांद लगाए। क्षेत्र विधायक आशीष शर्मा ने कमेटी के कार्य की प्रशंसा करते हुए मेव समाज का देश की आजादी में बड़ा योगदान बताया। तथा तेज पड़ती गर्मी को देखकर क्षेत्र में पौधारोपण और ब्लड डोनेट कैंप जैसे कैंप

लगाने का सुझाव दिया जिसका कमेटी की उपाध्यक्ष मंजूर खान मेव ने स्वागत किया। इस मौके पर समाज के वरिष्ठ मानख़ा सरपंच जंजालखेड़ी, हुसैन पटेल सिकंदरखेड़ी, हाजी रईस भाई नदीवाले कन्नौद, इमरान पटेल डोकाकोई, कवर खां पार्षद अतवास, अमृत मास्टर कन्नौद, असगर पटेल डोकाकोई, समसुदीन चिश्ती मेव, इंदौर, अयुब मेव इंदौर, पूर्व अध्यक्ष हाफिज बनारसी इंदौर, मो. शारीब (एडवोकेट, इंदौर), पीरजी सरपंच रायपूरा, रमजान भाई सिकंदरखेड़ी, नूर भाई काजीपुरा, शादीक हलिम पटेल, हबीब पटेल डोकाकोई, हाजी शेख शरीफ खान खेल शिक्षक, राजखां भाई मूहारी, हयात सर खातेगांव, नूरखा पटेल लेहकी, रहीस मास्टर खेरखेड़ा, युवा नेता अकरम मेव, हाजी हबीब, पूर्व सरपंच असगर खां मेव, हाजी इदु खां, रईस सरपंच जलोदिया आदि ने उपस्थित होकर बच्चों का होंसला बढ़ाया। मेव कमेटी के अध्यक्ष एडवोकेट रमजान खान ने क्षेत्र और बाहर से आये मेहमानों का आभार व्यक्त किया। वहीं कमेटी के उपाध्यक्ष मंजूर खान मेव ने बताया कि शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे आयोजन आगे भी होते रहेंगे और सफल आयोजन के का क्रेडिट मेव कमेटी की पूरी टीम को और समाजजनों और मुख्य अतिथि के सहयोग को दिया।

रजिस्ट्री पर रोक केवल न्यायालय से, फिर जीत हुई हिम्मत वालों की

कलेक्टर ने आदेश दिया, निगमायुक्त ने आदेश दिया अन्यो ने आदेश दिया की रजिस्ट्री नहीं होगी बंद हो गई हम फिर लड़े इस बार फिर मय तथ्यों सहित जानकारी वित्त सचिव अमित राठौर को पहुंचा दिया गया फलस्वरूप लंबा पत्र उन्होंने मय कानूनी उदाहरण सहित कलेक्टरों, संभागायुक्त एवं जिला पंजीयक को भेजा।

आज से नहीं सन् 2006 से हम हिटलरशाही खिलाफ लड़ रहे जब जब गलत आदेश आया सामुहिक लड़ाई लड़ी और जीत मिली, कभी तात्कालीन कलेक्टर विवेक अग्रवाल की हठधर्मिता पर लड़े तो कभी हम तात्कालीन कलेक्टर आकाश त्रिपाठी के आदेश खिलाफ,,, रैरा अभिकरण आदेश खिलाफ, कमिश्नर तात्कालीन संजय दुबे के तुलसी नगर की रजिस्ट्री रोक के खिलाफ।

सह स्वामी पर नगर निगम एवं पंचायत ड्यूटी खिलाफ हम लड़े,,,।

अवैध कालोनियों का निर्माण हो रहा है तो निगमायुक्त रोक के कलेक्टर रोकें आप अपना काम मत करो जनता को हलाकान करो,,,

पिछले दरवाजे से बड़ी बड़ी रिश्त रजिस्ट्री कुछ खास दलालों के जरिए करवाने का खेल नामांतरण का खेल

चल रहा था हमेशा से चलता है और बस हम पिल पड़ते हैं।

और आम आदमी की लड़ाई लड़ते हैं, ना हम किसी कालोनाईजर की ना बिल्डर की ना माफिया की बस आम आदमी की लड़ाई लड़ते हैं।

हम वकील साथी हर गलत पर लड़ते हैं और एक पहचान इंदौर से स्थापित हो चली है,,, आम आदमी का विश्वास हमारे साथ आता गया, नामचीन संगठनों की तरह या आम संगठनों की तरह हम आत्मस्तुतिगान में या आत्म प्रशंशा में नहीं लगते, काम किया बस।

गलत पर लड़ना ही तो वकालत है। एक शब्द धाव कर गया था कि पंजीयन का काम करने वाले वकील केवल एवं केवल सेंटिंग करते हैं मोनोपली चलाते हैं और खास समुह का काम चलता है हमने उस शब्द को मन में उतार लिया और सन् 2006 से बदलाव की बयार ले आए।

हमेशा जन हित की लड़ाई आम आदमी की लड़ाई केवल न्यायालय में ही नहीं हर जगह लड़ना ही वकालत है और हम वह दायित्व कर्तव्य निभाते हैं।।।

प्रमोद कुमार द्विवेदी एडवोकेट
9826093634



मुबारकबाद मुबारकबाद : पिछले दिनों देवास में सन्न ग्रुप की जानिब से छठा इश्तिमाई शादी सम्मेलन संपन्न हुआ जिसमें 35 जोड़ों का निकाह हुआ, साथ ही मेधावी छात्र-छात्राओं, पत्रकार, खिलाडियों को मोमेंटो और शार्टीफिकेट देकर सम्मानित किया गया, कामयाब एवं शानदार कार्यक्रम के लिए शौकत दादा, हाजी सलीम मामू, बच्चू मामू, जावेद भाई, वसीम हुसैन एवं उनकी कमेटी को तहेदिल से बहुत बहुत मुबारकबाद



जावरा में मुस्लिम समाज द्वारा गाय माता के सम्मान में एक महत्वपूर्ण पहल की गई। समाज के प्रतिनिधियों ने एसडीएम साहब को राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपकर गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांग की। इस दौरान समाज के लोगों ने कहा कि गाय भारतीय संस्कृति, आस्था और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार है, इसलिए उसे राष्ट्रीय पशु का दर्जा दिया जाना चाहिए। ज्ञापन सौंपते समय बड़ी संख्या में मुस्लिम समाज के लोग उपस्थित रहे और सामाजिक सौहार्द एवं भाईचारे का संदेश दिया।

ईरान कैसे सुपरपावर से टकरा गया!

ईरान एक महीने और पाँच दिन से दुनिया की ताकतों से जंग लड़ रहा है। उसके अंदरूनी हालात कुछ इस तरह बताए जाते हैं।

1. अब तक 35 दिनों की जंग में किसी देश से आर्थिक मदद नहीं ली।
2. खाने-पीने की चीज़ों के लिए कोई अपील नहीं की।
3. दवाइयों के लिए कोई अपील नहीं की।
4. जंग शुरू होते ही देश में रोटी, पेट्रोल और डीज़ल मुफ्त कर दिया गया।
5. लगातार बमबारी के बावजूद एक भी ईरानी देश छोड़कर नहीं गया, बल्कि बाहर रहने वाले लोग वापस आ रहे हैं।
6. लॉकडाउन जैसा शब्द शायद किसी ईरानी को पता ही नहीं।
7. बड़े व्यापारियों ने लिख दिया है कि, सामान ले जाओ, पैसे बाद में दे देना।
8. मंत्री लोग भी आम जनता के साथ सड़कों पर विरोध प्रदर्शन में शामिल हैं।
9. राष्ट्रपति खुद मार्केट जाकर दाम और सुविधाएँ चेक कर रहा है।

ये सब कैसे संभव हुआ, जबकि देश 47 साल से प्रतिबंधों और जंगों में घिरा है?

क्योंकि:

1. सुप्रीम लीडर ने अपना निजी घर तक नहीं खरीदा।
2. मंत्रियों और जनरलों के बच्चों को विदेश में पढ़ने की अनुमति नहीं।
3. सरकारी लोगों के विदेश में बैंक अकाउंट नहीं हो सकते।
4. किसी मंत्री या जनरल का विदेश में घर नहीं है।
5. सुप्रीम लीडर रोज़ लगभग 18 घंटे काम करता है।
6. को-एजुकेशन के नाम पर कोई 'ग़लत माहौल' नहीं।
7. विदेशी (अमेरिकन/यूरोपियन) स्कूल-कॉलेज नहीं हैं।
8. शिक्षा मुफ्त है, इसलिए ज़यादातर लोग पढ़े-लिखे हैं।
9. दाम बढ़ाने का फैसला संसद और सुप्रीम लीडर के जरिए होता है।

पानी की एक्सपायरी डेट क्या है

अक्सर हम पानी की 'एक्सपायरी डेट' अपनी सुविधा और सोच के हिसाब से तय कर लेते हैं, जिसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। जरा इस विरोधाभास पर विचार कीजिए:

- **शहरों में:** जहाँ नल का पानी रोज़ आता है, वहाँ कल का पानी 'बासी' मानकर बहा दिया जाता है। (एक्सपायरी डेट: 1 दिन)

- **जहाँ पानी दो या आठ दिन में आता है:** वहाँ वही पानी दो या आठ दिनों तक बिल्कुल ताजा और पीने योग्य रहता है।

- **शादी-समारोहों में:** जैसे ही हाथ में बिसलरी की नई बोतल आती है, पुरानी आधी भरी बोतल को तुरंत 'बेकार' समझकर फेंक दिया जाता है।

दूसरी तरफ़ की सच्चाई...

- **रेगिस्तान में:** यात्रा करते समय पानी की एक-एक बूंद तब तक अमृत और ताजी रहती है, जब तक कि अगला जलस्रोत न मिल जाए।

- **प्रकृति में:** बांधों और तालाबों का पानी अगले मानसून तक (और सूखे की स्थिति में 2-3 साल तक) पूरी तरह उपयोगी रहता है।

- **बोरवेल में:** 50 से 500 फीट नीचे से जो पानी हम निकालते हैं, वह जमीन के अंदर सैकड़ों-हजारों साल पुराना होता है, फिर भी वह सेहत के लिए सबसे सुरक्षित और शुद्ध होता है।

निष्कर्ष (सोचने वाली बात)

कुल मिलाकर, पानी की कोई एक्सपायरी डेट नहीं होती। पानी की एक्सपायरी केवल हमारी सोच और उसकी उपलब्धता के आधार पर तय होती है। जब पानी आसानी से मिलता है, तो हम उसे बासी कह देते हैं; जब किल्लत होती है, तो वही पानी अनमोल हो जाता है।

अतः पानी का उपयोग विवेकशीलता, जिम्मेदारी और संयम से करें। अन्यथा, पानी खत्म होने से पहले हमारी यह लापरवाह सोच ही हमें प्यासा मार डालेगी।

स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें, और पानी बचाएं। दुवाओं में याद रखें।

डॉ जाकिर हुसैन मेव (9827790789)

10. घर में रोटी बनाना मना है, ताकि महिलाएं पढ़ सकें। और सामाजिक कामों में भाग लें।

11. डिलीवरी (बच्चे के जन्म) मुफ्त है और माँ को पैसे भी दिए जाते हैं।

12. इलाज का 70% खर्च सरकार देती है।

13. चोरी-डकैती नहीं होती।

14. कोई शाही कल्चर या वीआईपी सिस्टम नहीं।

15. भिखारी नहीं मिलते।

16. नमाज़ न पढ़ना बुरा माना जाता है।

17. रात के समय पुलिस किसी के घर में दाखिल नहीं हो सकती।

18. जेलें खाली हैं, और कैदियों को काम देकर उनके परिवार की मदद की जाती है।

19. जुमे के इमाम का दर्जा गवर्नर से ऊँचा माना जाता है।

20. अधिकारी जुमे की नमाज़ में आगे की कतार में होते हैं।

21. समाज में बड़े-छोटे का फर्क नहीं।

22. शिक्षक को बहुत सम्मान दिया जाता है।

23. नौकर रखने का रिवाज़ नहीं।

24. लोग मानसिक रूप से संतुष्ट और खुश दिखते हैं।

इसे 'विलायत-ए-फकीह' का देश कहा जाता है, जिसे ईरानी लोग एक बड़ी जिम्मेदारी मानते हैं।

वे मानते हैं कि यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसे सुरक्षित रखना उनका कर्तव्य है, और इसके लिए वे हर कुर्बानी देने को तैयार हैं।

उनके इसी जज़्बे और विश्वास की वजह से कई लोग उनका समर्थन करते हैं।

अगर ऐसी व्यवस्था मजबूत हो जाए, तो दुनिया में ईसाफ और अमन आ सकता है।

इस संदेश में कहा गया है कि:

सब्र, एकता और आपसी भाईचारे की ज़रूरत है।

गलत कामों से बचना चाहिए।

खुद को बेहतर समाज के लिए तैयार करना चाहिए।

मेवात एकेडमी घाँसोली की टॉपर बच्चियों को राज्य सरकार से स्कूटी के रूप में मिलेगा सम्मान



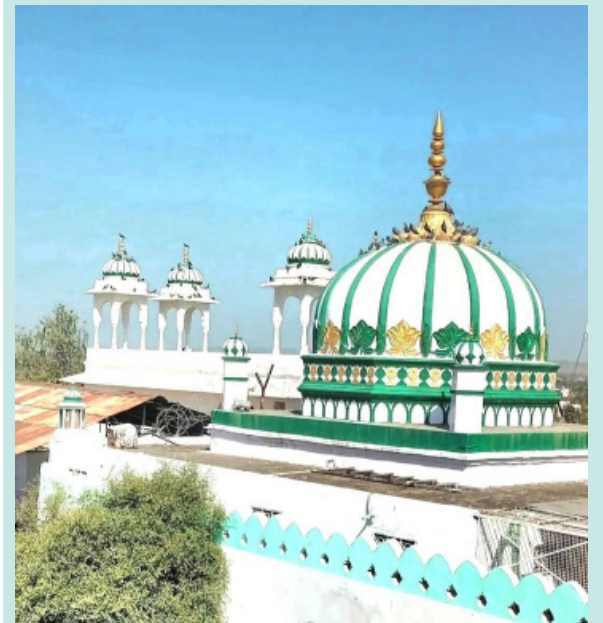
मेवात एकेडमी की 2 बच्चियों (सानिया घाँसोली और समा घाँसोली) का चयन 'काली बाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी योजना 2025-26' में हो गया है। हाल ही पिछले सत्र में दोनों बच्चियाँ मेवात एकेडमी से पासआउट हुई हैं। समा घाँसोली को 12th आर्ट्स में मेवात एकेडमी टॉप करने पर स्कूल प्रसाशन द्वारा पहले ही लैपटॉप देकर सम्मानित किया जा चुका है। आपको बता दें इससे पहले भी मेवात एकेडमी की छात्रा रही फरजाना घाँसोली और नजराना कोलगाँव को ये सम्मान मिल चुका है। आप दोनों को बहुत बहुत मुबारकबाद गुड़िया। -TEAM MEWAT ACADEMY

बेरोज़गार नौजवानों को हुनरमंद और खुदमुख्तार बनाने के लिए Vocational Skill Development Center (VSDC) में मुफ्त टेक्निकल ट्रेनिंग शुरू की गई है।

उपलब्ध कोर्सेस : मोबाइल रिपेयरिंग, इलेक्ट्रिक व्हीकल (EV) टेक्नोलॉजी, RAC (फ्रिज और एसी रिपेयरिंग), इलेक्ट्रिकल होम अप्लायंसेस रिपेयरिंग

VSDC में सिर्फ़ किताबी तालीम नहीं, बल्कि प्रैक्टिकल ट्रेनिंग पर खास तवज्जो दी जाती है, ताकि नौजवान हुनर सीखकर अपने लिए बेहतर रोज़गार और कारोबार के मौक़े हासिल कर सकें। मुफ्त ट्रेनिंग, माहिर ट्रेनर्स, मॉडर्न लैब की सहूलियत, रोज़गार और स्वरोज़गार के बेहतर मौक़े आइए, हुनर सीखें और अपने बेहतर मुस्तक़बिल की तरफ़ पहला क़दम बढ़ाएँ।

संपर्क करें : 8889997343, 9109975321



जयपुर से 40 किलोमीटर दूर ताला गाँव में स्थित मशहूर सूफी सन्त शेख़ बुरहान की दरगाह एक छोटी सी पहाड़ी पर मौजूद है। लगभग 80 सीढ़ियों से चढ़कर मुख्य मज़ार तक पहुँचा जा सकता है। शेख़ बुरहान 1398 ई. में तैमूर लंग के साथ दिल्ली आए थे। कुछ साल दिल्ली में रहने के बाद वे रायसर पहुँचे और फिर वहाँ से अमरसर होते हुए ताला में एक छोटी सी पहाड़ी पर तन्हाई में इबादत करने के लिए उन्होंने अपनी खानकाह बनाई।

शेखावाटी की तारीख (इतिहास) पर लिखी सबसे पुरानी और सही किताबों में से एक 'माधोवंश-प्रकाश' के मुताबिक 1428 ई. में दिल्ली से ताला के रास्ते में शेख़ बुरहान ने कुछ दिनों के लिए आराम करने की खातिर अमरसर के करीब पड़ाव डाला, तब कछवाहा हाकिम बरवाड़ा के राव मोकल जी बेटे की मुराद लिए शेख़ बुरहान की खिदमत में हाज़िर हुए।

शेख़ बुरहान की दुआ और बरकत से राव मोकल को बेटा नसीब हुआ। इससे राव मोकल इतने मुतासिर हुए कि उन्होंने अपने बेटे का नाम शेख़ बुरहान के नाम पर 'राव शेखा' रख दिया। शेख़ बुरहान की ही दुआओं से राव शेखा बहुत बहादुर और कामयाब राजा बने। इनके खानदान वाले आगे चलकर 'शेखावत' कहलाए।

उन्होंने लगातार सफर कर दुखी और परेशान लोगों की तकलीफें दूर कीं। शेखावाटी की तारीख पर लिखी एक और किताब 'केसरी सिंह समर' से भी शेख़ बुरहान के बारे में अहम जानकारी मिलती है।

केसरी सिंह समर की कुछ पंक्तियाँ इस तरह हैं:-

तज करि मक्क शरीफ नांव बुरहान सुअल्ली।

उत्तर देश दिखनाव आय पहुँच्यो जिन दिल्ली।।

निरख भाव उमराव खाँ सुल्तान निहारे।

खलक मुलक देखताँ पाँव ढूँढा हड़ धारे।।

दरवेश आय लगाय दम सिंगी नाद मुख उच्चरै।

सुनि कान सबद मोकल नरिंद संमाने बहु आदरै।।

इन पंक्तियों का मतलब यह है कि शेख़ बुरहान अली मक्का शरीफ छोड़कर दिल्ली आए। कई रईस, बादशाह और उमराव उनके दीदार करने को उनके पास आए। ये दरवेश कई मुल्कों से गुज़रते हुए आखिर में ढूँढाड़ इलाके पहुँचे जहाँ राव मोकल ने उनका बहुत एहताराम और इस्तकबाल किया।

शेख़ बुरहान के ताला स्थित मकबरे की अंदरूनी दीवारों पर खूबसूरत रंगीन काँच की जड़ाई का काम किया गया है। मकबरे की अंदरूनी छत अलग-अलग रंगों के बेलबूटों से सजी हुई है। मकबरे के गुम्बद पर लगा कलश एक खिले हुए फूल की शक्ल में है।

दरगाह के अंदर कुछ कमरे बने हुए हैं जिनका इस्तेमाल ज़ायरीनों के ठहरने के लिए किया जाता है। सभी मजहब के लोगों की शेख़ बुरहान में अकीदत है, खासतौर पर शेखावत राजपूतों की। इनका उर्स बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

**नमाज कायम करें
जकात देते रहें**

मेवात के किसान के बेटे शोएब अख्तर मेव ने रचा इतिहास

UPSC परीक्षा में देशभर में हासिल की तीसरी रैंक, बने MSME मंत्रालय में सहायक निदेशक विपरीत परिस्थितियों और आर्थिक तंगहाली को मात देकर शोएब ने हासिल किया देश का प्रतिष्ठित पद। भारतीय उद्यम विकास सेवा (IEDS) के तहत सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय में मिली 'ग्रेड-1 सहायक निदेशक' की जिम्मेदारी। लक्ष्य के प्रति थे इतने समर्पित कि दिल्ली पुलिस में सब-इंस्पेक्टर (SI) के पद को भी ठुकरा दिया था।

मेवात हरियाणा के पिछड़े माने जाने वाले नूंह (मेवात) जिले के फिरोजपुर झिरका के एक छोटे से गाँव से निकलकर एक युवा ने देश के सबसे प्रतिष्ठित मंच पर सफलता का ऐसा परचम लहराया है, जिसने पूरे प्रदेश और देश को गौरवान्वित कर दिया है। एक साधारण किसान के बेटे 'शोएब अख्तर मेव' ने संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित परीक्षा में देशभर में तीसरी (3rd) रैंक हासिल की है। इस अभूतपूर्व सफलता के साथ ही शोएब का चयन केंद्र सरकार के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) मंत्रालय के अंतर्गत सहायक निदेशक (ग्रेड-1) के पद पर हुआ है। उन्हें भारतीय उद्यम विकास सेवा (IEDS) केंद्र आवंटित किया गया है।

पारिवारिक पृष्ठभूमि: अभावों के बीच पली-बढ़ी सफलता की कहानी: शोएब अख्तर मेव की यह सफलता इसलिए बेहद खास और प्रेरणादायक है क्योंकि उनका जन्म किसी रसूखदार या साधन-संपन्न परिवार में नहीं, बल्कि बेहद सामान्य और ग्रामीण परिवेश में हुआ था। उनके पिता 'हाजी फारूक (बनारसी) मेव साहब' पेशे से एक साधारण किसान हैं, जो खेती-किसानी करके अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं।

मेवात जैसे क्षेत्र में, जहाँ आज भी उच्च शिक्षा के बुनियादी संसाधनों का अभाव है, वहाँ शोएब ने विपरीत आर्थिक परिस्थितियों और सीमित संसाधनों के बीच अपनी पढ़ाई पूरी की। घर की तंगहाली और ग्रामीण परिवेश की चुनौतियाँ कभी भी उनके हौसलों को ढिगा नहीं सकीं। पिता हाजी फारूक ने अपनी तंगहाली को कभी बच्चों की पढ़ाई के आड़े नहीं आने दिया और शोएब की लगन को देखते हुए हर संभव सहायता की। आज बेटे की इस ऐतिहासिक

सफलता पर न केवल पिता के आंसू छलक आए, बल्कि पूरे फिरोजपुर झिरका क्षेत्र में जश्न का माहौल है।

बड़ा लक्ष्य और बड़ा त्याग: दिल्ली पुलिस की नौकरी को कहा 'ना' शोएब अख्तर की इस यात्रा में उनका दृढ़ संकल्प और स्पष्ट दृष्टिकोण साफ नजर आता है। इस बड़ी सफलता से पहले शोएब का चयन कर्मचारी चयन आयोग (SSC) के माध्यम से 'दिल्ली पुलिस में सब-इंस्पेक्टर (SI)' के पद पर भी हो गया था। युवाओं के लिए दिल्ली पुलिस में सब-इंस्पेक्टर बनना एक बड़ा सपना होता है, और एक सामान्य परिवार के लिए यह बेहद सुरक्षित सरकारी नौकरी थी।

'जब लक्ष्य देश की सेवा का सबसे बड़ा मंच हो, तो छोटे पड़ावों पर रुकना खुद के साथ समझौता करने जैसा होता है।' : 'शोएब अख्तर' शोएब के मन में कुछ बड़ा करने और देश के विकास में नीतिगत स्तर पर योगदान देने की तड़प थी। उन्होंने एक साहसिक निर्णय लेते हुए दिल्ली पुलिस के सब-इंस्पेक्टर (SI) पद को ज्वाइन नहीं किया। उन्होंने जोखिम उठाया और अपना

पूरा ध्यान यूपीएससी (UPSC) की तैयारी पर केंद्रित रखा। आज उनके इसी अटूट विश्वास और त्याग ने उन्हें देश के शीर्ष अधिकारियों की सूची में ला खड़ा किया है।

MSME मंत्रालय में संभालेंगे 'सहायक निदेशक' का अहम कार्यभार: यूपीएससी परीक्षा में ऑल इंडिया तीसरी रैंक हासिल करने के बाद शोएब अख्तर की नियुक्ति 'भारतीय उद्यम विकास सेवा (Indian Enterprise Development Service - IEDS)' के तहत की जा रही है। वह केंद्रीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) मंत्रालय में सहायक निदेशक

(Category-1 / Grade-1) के रूप में देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाने वाले एमएसएमई सेक्टर को मजबूत करने में अपनी भूमिका निभाएंगे।

इस पद पर रहते हुए शोएब देश में नए उद्यमियों को बढ़ावा देने, युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने और भारत सरकार के 'आत्मनिर्भर भारत' एवं 'मेक इन इंडिया' जैसे अभियानों को जमीनी स्तर पर लागू करने का काम करेंगे।

मेवात क्षेत्र के युवाओं के लिए बने रोल मॉडल: शोएब अख्तर की इस सफलता ने मेवात (नूंह) जिले की उस रूढ़िवादी छवि को भी तोड़ा है, जो अक्सर शिक्षा के पिछड़ेपन को लेकर समाज के सामने आती थी। शोएब की इस उपलब्धि पर क्षेत्र के बुद्धिजीवियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और प्रशासनिक अधिकारियों ने उन्हें बधाई दी है। ग्रामीणों का कहना है कि शोएब ने साबित कर दिया है कि यदि इरादे मजबूत हों, तो सुविधाओं की कमी कभी भी सफलता का रास्ता नहीं रोक सकती। शोएब अब मेवात और पूरे हरियाणा के उन लाखों युवाओं के लिए एक रोल मॉडल बन चुके हैं, जो विपरीत परिस्थितियों के कारण अपने सपनों को बीच में ही छोड़ देते हैं।

पिता हाजी फारूक (बनारसी) मेव का भावुक संदेश: बेटे की सफलता पर गर्व से सीना चौड़ा कर चुके पिता हाजी फारूक (बनारसी) मेव साहब ने कहा, 'मैंने हमेशा मिट्टी से जुड़कर मेहनत की है, और आज मेरे बेटे ने उस मेहनत को सोने में बदल दिया। शोएब बचपन से ही शांत और पढ़ाई के प्रति बेहद गंभीर था। हमारी आर्थिक स्थिति मजबूत नहीं थी, लेकिन उसका हौसला हमेशा सातवें आसमान पर रहता था। आज उसकी सफलता ने हमारी पीढ़ियों के संघर्ष को सफल बना दिया है। मुझे उम्मीद है कि वह पूरी ईमानदारी से देश और समाज की सेवा करेगा।' इस अवसर पर न्यू मेव टाइम्स परिवार एवं मेव ट्रस्ट इंदौर अपनी मुबारकबाद पेश करता है।

'हसद-रूह को झुलसा देने वाला खामोश ज़हर'

हसद इंसानी फितरत का वो स्याह हिस्सा है जो अक्सर नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है, लेकिन यही अनदेखी इसे शख्सियत पर हावी कर देती है। चूंकि यह एक मन्फी (Negative) जज़्बा है, इसलिए कोई भी इसे खुले दिल से तस्लीम नहीं करता। मगर हकीकत यही है कि यह खामोश ज़हर रिश्तों की बुनियादें खोखली कर देता है और इंसान को अंदर ही अंदर राख बना देता है।

हसद की पहचान:

चेहरे के नकाब और हकीकत

अक्सर आपके आस-पास मौजूद 'खैर-खाह' असल में हसद की आग में जल रहे होते हैं। इन्हें पहचानने के लिए कुछ नफ़्सीयाती टूल्स (Psychological Tools) मददगार साबित हो सकते हैं:

1 माइक्रो-एक्सप्रेशंस (Micro-expressions): जब आप किसी को अपनी कामयाबी की खबर सुनाएं, तो उनके चेहरे पर उभरने वाले पहले पल के तास्सुरात को गौर से देखें। अगर उस पल में नाज़ेबा शिकन या नागवारी झलके, तो समझ लें कि तह-ए-दिल में हसद मौजूद है। अगर बिल्कुल शुरू में ये गौर नहीं किया तो फिर इंसान चेहरे पर नकाब लगा लेता है।

2 नाकामी पर चमकती आंखें: एक हासिद शख्स आपकी मुश्किल या नाकामी पर हमदर्दी का मुखौटा तो पहन लेगा, लेकिन उसकी आंखों की फौरी चमक उसकी असली खुशी बयां कर देती है।

3 ज़हरीली तारीफ: ऐसे लोग आपकी मेहनत को 'किस्मत' का नाम देकर छोटा करने की कोशिश करते हैं। उनकी तारीफ में अक्सर तंज़ की चुभन शामिल होती है। अक्सर ऐसे लोग

आपकी उस चीज़ की तारीफ करते नज़र आयेंगे जो आपके पास अब नहीं होगी।

4 रवैए का उतार-चढ़ाव: इनका रवैया आपके साथ एक सा नहीं रहता। कभी ये शदीद गर्मजोशी दिखाएंगे और कभी बिना वजह सर्द पड़कर आपको इग्नोर (Ignore) करने लगेंगे।

जो लोग आपसे हसद रखते हैं उन्हें पहचान कर उनसे एक मुनासिब दूरी इख्तियार करें और उनकी हरकतों पर सतर्क रहें।

हसद के अस्बाब (वजह)

हसद की जड़ें अक्सर अदम तहफ़फ़ुज़ (Insecurity) और मुवाज़ने (Comparison) में होती हैं।

1 तरक्की का खौफ: किसी कुलीग, पड़ोसी या रिश्तेदार का आगे बढ़ जाना अक्सर दूसरों के लिए नागवारी का सबब बनता है।

2 कुदरती अतियात: किसी की ज़हानत (Intelligence), हुस्न या खुदा-दाद सलाहियतें भी हसद की वजह बन सकती हैं।

3 सोशल मीडिया का सराब: आज के दौर में सोशल मीडिया पर दूसरों की 'परफेक्ट' ज़िंदगी की नुमाइश ने लोगों के अंदर एहसास-ए-कमतरी और मुवाज़ने (Comparison) की आग को मज़ीद भड़का दिया है।

इस्लाह-ए-नफ़्स: हसद पर काबू पाने के ज़ौक-ओ-तरीके

एक मोमिन और एक बा-शऊर इंसान की हैसियत से हसद को पालने के बजाय उसका इलाज करना ज़रूरी है। इसके लिए चंद सुनहरे उसूल ये हैं:

1) एतराफ़ और तस्लीम (Recognition)

सबसे पहला कदम यह मानना है कि 'हाँ, मेरे अंदर यह जज़्बा उभर रहा है।' जब तक आप बीमारी को पहचानेंगे नहीं, इलाज मुमकिन नहीं।

2) हकीकत की तलाश

जिसे हम दूर से चमकता चांद समझ रहे होते हैं, करीब जाने पर मालूम होता है कि उसमें भी दाग हैं। जिसे आप हसद की निगाह से देख रहे हैं, मुमकिन है उसकी ज़िंदगी में ऐसी आजमाइशें हों जिन्हें आप बर्दाश्त न कर सकें। उनकी मुश्किलों को समझें, हसद खुद-ब-खुद हमदर्दी में बदल जाएगी।

3) शुक्रगुज़ारी की मशक

हसद का बेहतरिन तोड़ 'शुक्र' है। अपनी निगाह हमेशा उन लोगों पर रखें जो वसाइल में आपसे कमतर हैं। यह एहसास कि आपके पास वह सब है जो कितनों का ख़ाब है, दिल को इत्मीनान और शुक्र से भर देता है।

4) रश्क को तरक्की का ज़रिया बनाएं

हसद को 'रश्क' (Positive Emulation) में बदलें। दूसरों की खूबी से जलने के बजाय उनसे मुतास्सिर (Motivate) हों। उनकी मेहनत की तारीफ करें और खुद को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

हासिल-हसद दूसरों का नुकसान करे या न करे, यह हासिद की अपनी शख्सियत को ज़रूर झुलसा देती है। यह हमारी रूहानी और ज़हनी सुकून का दुश्मन है। अक्लमंदी इसी में है कि इस मन्फी ताक़त को अपनी ज़ाती तरक्की और तामीरी कामों (Constructive Work) में इस्तेमाल किया जाए। दूसरों की खुशियों में शरीक होना और उनकी कामयाबी की कद्र करना ही वो सफ़ित है जो इंसान को मखलूक-ए-खुदा में मुमताज़ बनाती है!

गरीब बेटियों के लिए कुछ करें

हमारे समाज में आज भी बहुत सी गरीब बेटियाँ सिर्फ इसलिए घर बसाने से महरूम रह जाती हैं, क्योंकि उनके माँ-बाप के पास दहेज देने की ताकत नहीं होती।

आइए, मिलकर कुछ करते हैं

अपने आस-पास एक नज़र डालिए।

कोई गरीब बाप की बेटी, किसी जान-पहचान वाले की बहन या रिश्तेदार-जिसकी शादी में दहेज की वजह से रुकावट आ रही हो-तो आगे बढ़िए और उसकी मदद के लिए हाथ बढ़ाइए।

मदद कई तरह से हो सकती है

पैसों से — जितना हो सके, उतना दिल खोलकर दीजिए

रिश्ता ढूँढ़ने में — कोई अच्छा घर-परिवार जोड़ने में मदद कीजिए

शादी के इंतज़ाम में — खाना, कपड़ा, सजावट — जो बन पड़े

बस एक अच्छा कदम — किसी नेक इंसान से मिलवा दीजिए

याद रखिए

एक छोटी सी मदद किसी की पूरी ज़िंदगी सँवार सकती है।

नेकी करिए, दिल से करिए।

अल्लाह हम सबको यह नेक काम करने की ताकत और हिम्मत दे। आमीन

चाँद खाँ मेवाती

अपने शरीर की सेहत जांचें : 7 आसान और शक्तिशाली सेल्फ-टेस्ट

प्रस्तावना

हमारा शरीर कभी भी अचानक खराब नहीं होता, यह हमेशा खराब होने से पहले छोटे-छोटे वार्निंग साइन देता है। अक्सर हम इन संकेतों को सामान्य थकान समझकर नजरअंदाज कर देते हैं, लेकिन यही अनदेखी आगे चलकर बड़ी शारीरिक कमजोरी या गंभीर बीमारी का कारण बनती है। विशेष रूप से 40 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों और बुजुर्गों के लिए यह समझना आवश्यक है कि उनका शरीर अंदरूनी रूप से कैसे काम कर रहा है। नीचे सात ऐसे महत्वपूर्ण सेल्फ-टेस्ट दिए गए हैं जो आपके नर्वस सिस्टम से लेकर हृदय और फेफड़ों की असल स्थिति को प्रकट कर सकते हैं।

1. नर्वस सिस्टम और बैलेंस टेस्ट

यह टेस्ट दिमाग और शरीर के बीच के तालमेल की जांच करता है। इसे करने के लिए सीधे खड़े हो जाएं और नजर सामने किसी बिंदु पर टिकाएं, फिर धीरे से अपनी आँखें बंद कर लें।

लक्ष्य: आपको कम से कम 10 सेकंड तक बिना हिले-डुले और बिना डगमगाए खड़ा रहना है।

निदान: यदि 10 सेकंड से पहले ही आपका शरीर डगमगाने लगे या आपको सहारा लेने का मन करे, तो यह संकेत है कि आपका नर्वस सिस्टम कमजोर हो रहा है और दिमाग से शरीर तक जाने वाले सिग्नल्स धीमे पड़ गए हैं।

2. पैरों की ताकत (साकॉपीनिया) टेस्ट

पैरों की मजबूती आपकी 'आजादी' का पैमाना है। इस टेस्ट के लिए एक मजबूत कुर्सी पर बैठ जाएं और बिना हाथों का सहारा लिए केवल पैरों के जोर से खड़े हों और फिर बैठें।

लक्ष्य: इस प्रक्रिया को लगातार पाँच बार आराम से पूरा करना है।

निदान: यदि खड़े होने में बहुत जोर लगे या घुटनों में दर्द हो,

तो यह मसल लॉस (साकॉपीनिया) का संकेत है। मांसपेशियों की यह कमजोरी उम्र से पहले ही शरीर को बूढ़ा बना देती है।

3. हृदय स्वास्थ्य और स्टेमिना टेस्ट

यह परीक्षण बताता है कि आपका हृदय स्ट्रेस झेलने में सक्षम है या नहीं। इसके लिए 30 सेकंड तक अपने घर में ही तेज चाल से चलें या सीढ़ियाँ चढ़ें।

चेतावनी : यदि डॉक्टर ने भारी कसरत से मना किया है, तो इसे न करें।

निदान: यदि मात्र 30 सेकंड में सांस बेकाबू हो जाए, छाती में भारीपन महसूस हो या दिल बहुत जोर से धड़कने लगे, तो यह हार्ट स्ट्रेस और ऑक्सीजन सर्कुलेशन की कमी का संकेत हो सकता है।

4. मानसिक सतर्कता और याददाश्त टेस्ट

ब्रेन एजिंग या याददाश्त की स्थिति जानने के लिए पाँच सरल चीजों के नाम याद रखें: सेब, चाबी, किताब, पेन और पानी। 1 मिनट तक अपना ध्यान कहीं और भटकाएं और फिर इन्हें दोहराएं।

निदान: यदि आप केवल एक-दो चीजें ही याद रख पा रहे हैं, तो यह शॉर्ट टर्म मेमोरी के कमजोर होने और एकाग्रता में कमी का प्रारंभिक लक्षण है।

5. फेफड़ों की कार्यक्षमता (Lung Capacity) टेस्ट

फेफड़ों की ताकत नापने के लिए एक गहरी सांस लें और उसी एक सांस में तेज-तेज गिनती शुरू करें।

लक्ष्य: बिना दोबारा सांस लिए गिनती जारी रखें।

निदान: यदि आप 20 की गिनती तक पहुँचने से पहले ही रुक जाते हैं या सांस खींचनी पड़ती है, तो आपकी लंग कैपेसिटी घट चुकी है। इससे शरीर की ऑक्सीजन सोखने की शक्ति कम हो जाती है, जिससे हल्का काम भी भारी लगने लगता है।

6. नसों की सेहत और डायबिटीज के संकेत

अपने पैरों के तलवों में होने वाली संवेदनाओं पर ध्यान दें। क्या वहां अक्सर झनझनाहट, जलन या सुन्नपन (Numbness) महसूस होता है?

निदान : इन लक्षणों को केवल थकान न समझें। यह डायबिटीज का शुरुआती सिग्नल या न्यूरोपैथी (नर्व डैमेज) का लक्षण हो सकता है, जो रक्त में शुगर लेवल लंबे समय तक बढ़े रहने के कारण होता है।

7. बॉडी कोर्डिनेशन और रिफ्लेक्स टेस्ट

सामान्य गति से 6-7 कदम चलें और फिर अचानक पीछे की ओर मुड़ें (U-turn)W)।

निदान : यदि मुड़ते समय संतुलन बिगड़ जाए या कदम उलझ जाएं, तो इसका मतलब है कि आपके ब्रेन सिग्नल्स स्लो हो रहे हैं और रिफ्लेक्स कमजोर पड़ रहे हैं। यह स्थिति भविष्य में गिरने या चोट लगने के जोखिम को बढ़ाती है।

निष्कर्ष और सुधार के उपाय

यदि आप इनमें से दो-तीन टेस्ट में भी विफल होते हैं, तो घबराने के बजाय तुरंत एक्शन लेने की जरूरत है। आपका शरीर दर्द, थकान या बेचैनी के जरिए आपसे बात करता है। सुधार के लिए ये कदम उठाएं:

रोजाना कम से कम 15 मिनट तेज वॉक करें।

हफ्ते में तीन-चार दिन हल्की एक्सरसाइज जैसे स्क्वाट्स और स्ट्रेचिंग करें।

बीपी, शुगर या हार्ट की समस्या होने पर नियमित चेकअप कराएं।

इन सातों टेस्ट को हर एक-दो महीने में दोहराएं ताकि आप अपनी प्रगति को ट्रैक कर सकें।

याद रखिए, सही आदतों की शुरुआत किसी भी उम्र में की जा सकती है और शरीर को फिर से मजबूत बनाना संभव है।

तुम्हारे बाद ये मौसम बहुत सताएगा !

फिराक़ गोरखपुरी ने कहा था-आने वाली नस्लें तुम पर फ़ख़ करेंगी हम-असरो/जब भी उनको ध्यान आएगा तुमने 'फ़िराक़' को देखा है।इसके बाद की नस्ल फ़क्र कर सकती है कि उसने बशीर बद्र को देखा है,बात की है,सुना है।ठीक दस साल पहले 27 मई 2016 को बशीर बद्र से भोपाल वाले घर पर मुलाकात हुई थी और 28 मई 2026 को इंतकाल हो गया।

राहत इंदौरी के मकान के बाद सड़क खत्म हो जाती है और बशीर बद्र का मकान भी सड़क का आखिरी है।बंद रास्ता बताता है कि यहीं सड़क मुकम्मल हो गई है।सफेद बंगला है,जिसके दरवाजे पर बशीर बद्र लिखा है और कोई घंटी नहीं है,जो अंदर वाले को बाहर बुला सके,पर आवाज देने पर दरवाजा खुलता है।मिलने की ख्वाहिश जाहिर की जाती है,जो कबूल होती है और चप्पल उतारकर हॉल में दाखिला होता है तो वही रिवायती घर जहां बूढ़ी महिला तख़्त पर नमाज पढ़ रही है।सामने बिखरा हुआ किचन है।हर दीवार पर बशीर बद्र के फोटो हैं और कुछ शेर गुदे हैं।सोफे हैं,पर पुराने पलंग भी हैं।थोड़े इंतजार के बाद अंदर बुला लिया जाता है।बड़ा कमरा है,जिसमें दो बड़े पलंग हैं।एक पर वो फनकार हैं,जिसे सुनने के लिए दुनिया के हर हिस्से में बताबी रही है।इंदौर से मिलने आए हैं,सुनते ही बशीर बद्र के चेहरे पर वही मुस्कान आ जाती है,जो मुशायरों में दिखाई देती थी,पर अब सिर्फ मुस्कराहट है।वो आवाज खो गई है,जिसने बरसों मुशायरों पर राज किया है।अभी उम्र बयासी साल हो रही है,पर खुद को पांच हजार पचपन साल का मानते हैं और हमेशा यही उम्र बताते रहे हैं,क्योंकि गुज़ल के आने से उम्र शुरू करते हैं।बशीर बद्र जिस कमरे में पैर फैलाए बिस्तर पर पड़े थे,वहां फोटो जवानी की याद दिला रहे थे।कमरा उथल-पुथल था,पर पास वाली अलमारी की किताबें सलीके से रखी थीं।सहारे से उठते हैं और हाथ पकड़कर हॉल तक आ जाते हैं।याददाश्त कमजोर हो चुकी है,कान ने सुनना कम कर दिया है।तभी आवाज आती है कि जोर से बोलिए और समझने में देर नहीं लगती कि यही बेगम राहत बद्र हैं,जो बशीर बद्र की सबसे बड़ी राहत हैं।दिन-रात खिदमत में लगी रहती हैं,जिनको देखकर याद आ गया कि दिलीप कुमार के



पास अगर सायरा बानो हैं तो बद्र को राहत मिली हैं।कहतीं हैं कि कोई शेर पढ़िए तो ये पूरा करेंगे।मिसरा पढ़ा-उजाले अपनी यादों के...और बशीर साहब ने मुस्कराते हुए कहा-हमारे साथ रहने दो...ना जाने किस गली में जिंदगी की शाम हो जाए।उंगलियां वैसे ही काम कर रही थीं,जो मुशायरा में पढ़ते वक़्त चलती थीं और यही उनका सिमनेचर स्टाइल था।चेहरे की खुशी बता रही थी कि फिर अदब की दुनिया में जाना चाहते हैं,पर पांच साल के कहीं गए नहीं हैं।घर हैं और पता नहीं होगा कि उनका शेर उनके साथ चिपक जाएगा-कई साल से कुछ खबर ही नहीं/कहां दिन गुजरा,कहां रात की।जो रात के गवाह रहे हैं,वो कैसे भूल सकते हैं कि बशीर बद्र के बिना मुशायरा की रात मुकम्मल हो ही नहीं पाती थी।अब सत्राटा है और फनकार रुकता है तो शोहरत रुक जाती है।जब तक मुशायरों में रहे,किसी को आगे निकलने की इजाजत नहीं दी और कोई निकल भी नहीं पाया।उनके जितने शेर मकबूल हैं,शायद किसी के हिस्से आए हों।फिर सुना दिया-यू ही बेसबब ना...फौरन पूरा कर दिया-फिरा करो,कोई शाम घर भी रहा करो।हर दिन नए शहर में सुबह-शाम करने वाले बशीर साहब की हर सुबह-शाम एक ही घर में गुजर रही है।रात के सुपर स्टार थे,जिनको सुनने के लिए हर जगह बताबी हुआ करती थी।वही बद्र हैं,जिनका शेर जुल्फिकार अली भुट्टो ने इंदिरा गांधी को सुनाया था,जब बंगाल समझौता हो रहा था-दुश्मनी जमकर करो लेकिन ये गुंजाइश रहे/जब कभी हम दोस्त हो जाएं तो शर्मिदा ना हों।भुट्टो ने लाहौर के अखबार में पढ़ा था और तब बशीर बद्र अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में पढ़ाया करते थे।इतने बड़े फनकार का पता जब भोपाल में खोज तो बताया गया कि कांग्रेस नेता नासिर इस्लाम के घर के सामने रहते हैं।बशीर साहब की नहीं,भोपाल की मेहरूमी थीं।राहत बद्र बोलना शुरू करतीं हैं कि चाहने वाले जरूर आते हैं,पर शायर कभी-कभार हाल जान लेते हैं।भोपाल वाले नहीं आते तो दूसरों की क्या बात करें।जब मुशायरों में थे,कोई पीछा नहीं छोड़ता था।कोई ना कोई हमेशा रहता और सब यहीं से अपने लिए रास्ते खोजते थे।ताकत चाहने वाले की हैं,जो नेपाल से मिलने आ जाते हैं।अभी कुछ दिन पहले इस बात की इजाजत लेने आए कि

नेपाली भाषा में इनकी किताब लिखना चाहते हैं।सवाल था-क्या सब इजाज़त लेकर काम कर रहे हैं ? कोई नहीं पूछता है,कई पब्लिशर्स हैं,जो लगातार किताबें निकाल रहे हैं,पर हमें पता नहीं है।वाणी प्रकाशन किताबों को बदल-बदल कर पेश कर रहा है,लेकिन पैसा नहीं आ रहा है।एक बार बात हुई तो कह दिया कि हम पहले ही दे चुके हैं।मैं स्कूल में पढ़ाती हूँ और इनकी पेशान है नहीं,पर शायर का घर है,पहले भी चलता था,अब भी चल जाता है।एक बेटा मुंबई तो दूसरा चेन्नई में है,लेकिन जहां बशीर बद्र हैं,वहां बरसों से सिर्फ दो हैं।मंजर भोपाली नहीं आते हैं,पूछ लिया तो बोलीं कि पहली बार जब मंजर इन्हें अपनी मां से मिलवाते ले गए थे,तब बशीर साहब से कहा था कि मेरा बेटा बहुत अच्छा गाता है।मौका दीजिएगा।इन्होंने वादा किया था कि पेटी-बिस्तर बांध लीजिए।अब कभी-कभी आपका बेटा मिलने आया करेगा और मंजर को दुनिया घुमा दी थी,पर वो सुध नहीं लेते।इन्हें उर्दू अकादमी का चीफ बनना है,इसलिए लड़ाई है और जब तक अकादमी में थे,लोग आया-जाया करते थे।अब कोई दरवाजे पर चिट्ठी फेंक जाता है तो पता चलता है कि अकादमी क्या कर रही है।राहत जब शिकायत कर रही होती हैं,तब बशीर बद्र का चेहरा मुस्कराता रहता है और ऐसा लगता है कि बेगम से कह रहे हों-कुछ तो मजबूरियां रही होंगी/यू कोई बेवफ़ा नहीं होता।बात जिस कमरे में हो रही थी,वो बड़ा था और पैर फैलाने से दीवार पर सिर नहीं लग रहा था,जबकि बशीर साहब का मकबूल शेर है-जिंदगी तू ने मुझे क़ब्र से कम दी है।जमीं/पांव फैलाऊं तो दीवार में सर लगता है।यहीं दीवार पर शेर चिपका था-जिस दिन से चला हूँ मेरी मंजिल पर नजर है/आंखों ने कभी मिल का पत्थर नहीं देखा।सामने वो अकेले बशीर बद्र थे,जो कभी पद्मश्री लेने राष्ट्रपति भवन नहीं गए थे।बेगम के पास कई शिकायतें हैं।सरकार तो खैर कुछ करती नहीं है और अफसोस जो कभी इनके इशारे पर दौड़ा करते थे,वो दिखते ही नहीं हैं।इन्होंने पहले ही बोल दिया था कि जिंदगी इसी का नाम है और कुछ शायरों से पहले आगाह कर दिया था।अभी कोई परेशानी नहीं है और जिसके पास दुनिया का इतना बड़ा शायर हो,वो कैसे परेशान हो सकता है।बस ये मुस्कराते रहते हैं और हमारी जिंदगी चलती रहती है।जब कुछ समझ नहीं आता है,तो इनकी किताबें पढ़ लेती हूँ। बशीर बद्र ने इशारा किया कि कुछ खिलाओ और नाश्ता आ गया।मेहमाननवाजी जिंदा है और जिंदा तो वो शेर भी है,जिसके बारे में मशहूर था कि मुशायरों में महिलाओं की तादाद बढ़ा दी थी।उम्र ने जरूर हमला बोला है,पर अपना काम कर चुके हैं और इतना कि कोई हरा नहीं सकता है! (साभार)

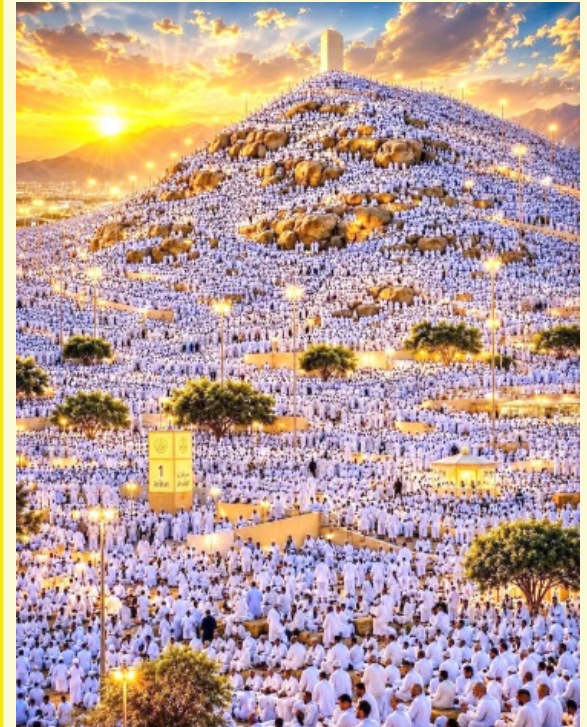


मेवात के मशहूर कलाकार जनाब गफ़रुद्दीन मेवाती को मोहतरमा राष्ट्रपति द्वारा पद्म श्री अवार्ड से सम्मानित किया जो मेवात के लिए गौरव की बात है। इस अवार्ड से सम्मानित होने वाले गफ़रुद्दीन मेवाती जी पहले व्यक्ति है। जिन होने अपनी कला से मेवात का नाम रोशन किया है। हम सब को आप पर गर्व है।

Alwar Mewat Institute of Education and Development



अलवर। गर्मियों की छुट्टियों में prof जुगमंदिर तायल यादगार डिजिटल लर्निंग सेंटर बेलाका पर कंप्यूटर ट्रेनिंग के साथ साथ सिलाई का कोर्स भी सुरु किया गया है। महिलाएं और किशोर बालिकाएं कंप्यूटर के साथ साथ सिलाई शिखने का काम भी करती है।



इस तस्वीर को गौर से देखिए!

यह उम्मत के वैश्विक इज्तिमा की तस्वीर है!

क्या आप बता सकते हैं:

- इसमें शिया कौन है और सुन्नी कौन है?
- इसमें देवबंदी कौन है और बरेलवी कौन है?
- इसमें मुकल्लिद कौन है और गैर-मुकल्लिद कौन है?
- इसमें तहरीकी कौन है और मदखली कौन है?
- इसमें अरबी कौन है और अजमी कौन है?
- इसमें ईरानी कौन है और सऊदी कौन है?

यकीनन, आप नहीं बता सकते!

तो कान खोलकर सुन लीजिए और अपने दिल में इस बात को बिठा लीजिए कि:

हम एक उम्मत हैं!

हमारा इत्तेहाद तौहीद की बुनियाद पर है!

हमारा इत्तेहाद उम्मत की बुनियाद पर है!

हमारा इत्तेहाद अल्लाह की बंदगी की बुनियाद पर है!

हमारा इत्तेहाद अल्लाह और उसके रसूल की इताअत की बुनियाद पर है!

हमारा इत्तेहाद अल्लाह के कलिमा की बुलंदी के लिए जद्दोजहद की बुनियाद पर है!

यही इस तस्वीर का पैगाम है!

यही हज की इबादत का पैगाम है!

और यही इस वैश्विक इज्तिमा का पैगाम है!



**“अल्लाह के सामने न कोई राष्ट्रपति,
न कोई आम इंसान... अफ्रीकी राष्ट्रपति
भी हज में ज़मीन पर सोए**

इंतकाल

देवास। मेवाती समाज के जनाब मरहूम हाजी अकबर खां (गुजरबापचा वालों) की बीवी, गम्बू भाई सरपंच, बाबू भाई, कल्लू भाई की वालदा एवं सलीम मामू (राष्ट्रीय रेस्टोरेंट) की बहन हज्जानी मुन्नी आपा का इंतकाल हो गया। मोहसीनपुरा मस्जिद में नमाजे जनाजा अदा की जाकर पठानकुआं स्थित कब्रस्तान में सुपुर्देखाक किया गया।

उज्जैन। मेव समाज के ताजपुरवाले हाजी मजीद खां साहब की बीवी एवं नबी खां नेताजी की भाभी, राजा भाई की वारदा हज्जानी कुलसुम बी का इंतकाल हो गया। जिन्हें जौहरबाद स्थानीय कब्रस्तान में सुपुर्देखाक किया गया।

इंदौर। मेवाती समाज के महफूज भाई के बड़े भाई, मोनू भाई, सारीक भाई के वालिद मकसूद भाई (टेलर) का इंतकाल हो गया। (इलियास कालोनी वाले) आपको बाद नमाजे मगरीब शाजी तालाब खजराना स्थित कब्रस्तान में सुपुर्देखाक किया गया।

भारत और चीन के बीच बीजिंग में सीमा मुद्दे पर हुई बातचीत, पटरी पर लौट रहे द्विपक्षीय संबंध

भारत और चीन ने पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) की स्थिति पर एक बेहद “रचनात्मक” और “भविष्य उन्मुख” चर्चा की है। दोनों देशों ने माना है कि सीमाई इलाकों में शांति और स्थिरता बनाए रखने से ही द्विपक्षीय संबंधों को धीरे-धीरे सामान्य बनाने की दिशा में प्रगति संभव हो सकती है। यह महत्वपूर्ण विमर्श बुधवार को बीजिंग में आयोजित भारत-चीन परामर्श एवं समन्वय कार्य तंत्र (WMCC) की बैठक के दौरान हुआ। दोनों देशों ने बुधवार को बीजिंग में आयोजित परामर्श एवं समन्वय कार्य तंत्र (डब्ल्यूएमसीसी) की बैठक के दौरान सीमा की स्थिति से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की।

विदेश मंत्रालय ने बातचीत के एक दिन बाद कहा, “चर्चाएं रचनात्मक और भविष्य उन्मुख रहीं।” भारत और चीन ने पिछले एक वर्ष में अपने संबंधों को फिर से मजबूत करने के लिए कई उपाय किए हैं, क्योंकि 2020 में गलवान घाटी में हिंसक संघर्ष और उसके बाद चार वर्षों से अधिक समय तक चले सैन्य गतिरोध के कारण दोनों देशों के संबंधों में काफी तनाव आ गया था।

मंत्रालय ने कहा, “दोनों पक्षों ने भारत-चीन सीमा क्षेत्रों की स्थिति की समीक्षा की। उन्होंने सीमा क्षेत्रों में शांति और स्थिरता बनाए रखने में हुई प्रगति पर संतोष व्यक्त किया, जिससे द्विपक्षीय संबंधों को धीरे-धीरे सामान्य बनाने की दिशा में प्रगति संभव हुई है।” दोनों पक्ष विशेष प्रतिनिधियों की अगली बैठक की “ठोस तैयारी” के लिए मिलकर काम करने पर भी सहमत हुए, जो चीन में आयोजित होनी है। पिछले वर्ष अगस्त में राष्ट्रीय सुरक्षा

सलाहकार अजित डोभाल और चीन के विदेश मंत्री वांग यी ने नयी दिल्ली में विशेष प्रतिनिधियों (एसआर) की वार्ता की थी, जिसमें सीमा पर शांति बनाए रखने के लिए कई परिणाम सामने आए थे।

विदेश मंत्रालय ने डब्ल्यूएमसीसी बैठक पर कहा, “दोनों पक्षों ने सीमा निर्धारण, सीमा प्रबंधन, तंत्र निर्माण और सीमा पार सहयोग



से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की।” मंत्रालय ने कहा कि भारतीय पक्ष ने सीमा पार नदियों पर विशेषज्ञ-स्तरीय अगले तंत्र की जल्द बैठक आयोजित करने पर जोर दिया। विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा, “दोनों पक्ष इस बात पर सहमत हुए कि वे कूटनीतिक और सैन्य स्तर पर नियमित संवाद और संपर्क बनाए रखेंगे। इसमें वे तंत्र भी शामिल होंगे जिन पर 24वीं विशेष प्रतिनिधि वार्ता के परिणामों के तहत सहमति बनी थी।”

भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश मंत्रालय में संयुक्त सचिव (पूर्व एशिया) सुजीत घोष ने किया, जबकि चीनी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व चीन के विदेश मंत्रालय के सीमा एवं महासागरीय मामलों के विभाग की महानिदेशक होऊ यानकी ने किया। घोष ने चीन के विदेश मंत्रालय के एशियाई मामलों के विभाग के निदेशक लियु जिनसोंग से भी मुलाकात की। संयुक्त सचिव ने चीन के सहायक विदेश मंत्री होंग लेइ से शिष्टाचार भेंट भी की। डब्ल्यूएमसीसी की यह बैठक ऐसे समय हुई जब भारत और चीन अपने तनावपूर्ण संबंधों को फिर से सामान्य बनाने की कोशिश कर रहे हैं। कई दौर की कूटनीतिक और सैन्य वार्ताओं के बाद दोनों देशों ने पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर कई तनाव वाले क्षेत्रों से अपने सैनिकों को पीछे हटाया।

अक्टूबर 2024 में दोनों पक्षों ने पूर्वी लद्दाख के अंतिम दो विवादित क्षेत्रों देपसांग और डेमचोक के लिए सैनिकों की वापसी संबंधी समझौते को अंतिम रूप दिया था। समझौते के कुछ दिनों बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने कजान में वार्ता की और संबंधों को बेहतर बनाने के लिए कई फैसले किए।

पिछले वर्ष अगस्त में प्रधानमंत्री मोदी शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के वार्षिक शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए चीन के तियानजिन शहर गए थे। एससीओ शिखर सम्मेलन के इतर मोदी और शी चिनफिंग के बीच विस्तृत बातचीत हुई थी। बैठक में मोदी ने कहा था कि भारत आपसी विश्वास, सम्मान और संवेदनशीलता के आधार पर चीन के साथ संबंधों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

बिना दहेज के मेव ने शादी की

जयपुर। जैसा कि हम देख रहे हैं सभी समाजों में बिना दहेज लिए रिश्ते नहीं हो रहे, फिर चाहे दहेज का स्वरूप अलग-अलग हो, कोई कार, मांगता है, तो कहता है आपकी बेटी के आने जाने में काम आएगी, कोई व्यापार के नाम पर, तो कोई मकान के नाम पर और समाज चुप हो इस स्वीकृति की मोहर लगा रहा है। लड़की वाला मजबूर हो उधार, ब्याज लेकर अपनी बेटी के हाथ पीले करता है, फिर कर्जा उतारने में पुरा जीवन व्यतीत हो जाता है, दहेज न दो तो लड़की को प्रतर्पित की घटना रोज सुनने को हमें मिलती है।

लेकिन इसके अतिरिक्त प्रत्येक समाज में कुछ ऐसे भी रहम दिल इंसान मौजूद हैं, जो अपने बच्चों की शादी सादगी एवं बिना दहेज लिये कर रहे हैं, जिससे दोनों परिवार में अमन एवं खुशहाली आगे तक बनी रहती है, समाज के लोगों को इन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए।

आज हम मेव (मेवाती) समाज के सेवानिवृत्त जज जनाब शहाबुद्दीन जैसे एक उच्च शिक्षित परिवार से आपका परिचय करा रहे हैं जिन्होंने पिछले दिनों अपने पुत्र शाहीन अहमद बीई (साफ्टवेयर इंजीनियर) लड़के की शादी बरेली (उप) के जनाब रईस मेव की बेटी सानिया के साथ बिना दहेज लिये शादी संपन्न कर पुरे मेव समाज के अलावा अन्य समाज जनो के मध्य लोकप्रियता हासिल कि, इस शादी कि क्षेत्र, चारों ओर हो रही होकर दोनों

परिवार कि तारीफ की जा रही है।

मेवात (राज) के ग्राम दादर जिला अलवर (राज), निवासी, जनाब शहाबुद्दीन साहब, जो पिछले 21, वर्षों से जयपुर में निवास रत हैं, वर्तमान में स्थायी लोक अदालत, भीलवाड़ा में अध्यक्ष के पद पर नियुक्त हैं ने पिछले दिनों अपने उच्च शिक्षित बेटे शाहीन अहमद (बीई, साफ्टवेयर इंजीनियर) जो ब्राजील की कंपनी में कार्यरत हैं की शादी बरेली (उप) निवासी रईस मेव की बेटी सानिया (BSc, MBA), के साथ बिना दहेज लिये कर दी, रिश्ते के पूर्व ही सहाबुद्दीन जी ने बता दिया था की किसी भी प्रकार का दहेज स्वीकार नहीं होगा, जिस पर लड़की के परिवार वालों ने सहमति दी।

ज्ञान रहे सहाबुद्दीन जी की बड़ी बेटी नसीम, Bsc. LLM, है तो दूसरी मोहसीना, MBA, LLB, ती सारी, अंजुम, MBBS, (gayno), दमाद डॉ. इरशाद (MBBS) जनरल सर्जन, दूसरे वहीद मेव (MA.PhD), बैंक मैनेजर, तीसरे मुशताक खान, (BE.instrument)।

कुल मिलाकर आज के आधुनिक युग में एक उच्च शिक्षित परिवार द्वारा बिना दहेज की शादी करना सराहनीय कार्य है, मेव समाज को इनसे इबरत हासिल कर, इनका सम्मान करना चाहिए। न्यू मेव टाइम्स परिवार आपको मुबारक बाद देता है।

मुख्यमंत्री योगी का सख्त निर्देश, स्वास्थ्य-बिजली विभाग हाई अलर्ट पर रखें विशेष निगरानी

लखनऊ। भीषण गर्मी की स्थिति को देखते हुए, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को राज्य में राहत और बचाव के लिए सक्रिय कदम उठाने का आदेश दिया। मुख्यमंत्री ने जिला मजिस्ट्रेटों (डीएम), स्वास्थ्य और बिजली विभागों तथा राहत एजेंसियों को उच्च सतर्कता बरतने का निर्देश दिया। स्थिति की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने वरिष्ठ अधिकारियों को अस्पतालों, पेयजल वितरण और बिजली आपूर्ति प्रणालियों के कामकाज पर कड़ी निगरानी रखने का निर्देश दिया।



उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि सरकारी अस्पतालों में पर्याप्त चिकित्सा व्यवस्था और लू लगने से पीड़ित मरीजों के लिए विशेष सुविधाएं सुनिश्चित की जानी चाहिए। मुख्यमंत्री ने जनता से भीषण लू (गर्मियों की हवाओं) के प्रति सतर्क रहने की अपील की। उन्होंने नागरिकों को बच्चों और बुजुर्गों का विशेष ध्यान रखने की सलाह दी और गर्मी से बचने के लिए सूनी या खादी के ढीले कपड़े पहनने का सुझाव दिया। मुख्यमंत्री ने विशेष रूप से सूखे के इस दौर में आकस्मिक आग लगने

की आशंका पैदा करने वाली किसी भी प्रकार की लापरवाही के प्रति आगाह किया। इसके अलावा, उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे बाहरी कामगारों और श्रमिकों पर विशेष ध्यान दें और यह सुनिश्चित करें कि उन्हें थकान, निर्जलीकरण और गर्मी से होने वाली बीमारियों से बचाया जाए।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने उत्तर-पश्चिम भारत में मौसम की स्थिति में बदलाव का पूर्वानुमान लगाया है। पश्चिमी विक्षोभ और पूर्वी हवाओं के आने से अगले तीन दिनों में लू की स्थिति में सुधार होने की संभावना है।

**ADMISSIONS OPEN FOR NEET
X, XI, XII & DROPPER BATCHES**



DR. PUNEET GUPTA
Director (Academics)
Head of Biology

**मध्यभारत में NEET के लिये
सबसे विश्वसनीय संस्थान !**

**7000 + MBBS
Selections**



MR. RAEES KHAN
Director (Academics)
Head of Chemistry

MEDISQUAD CLASSES PVT. LTD.

Premium Institute for NEET, XI & XII

Contact : **0731-4988810**

9425074587 | 9827320022

**Victory Chamber, 4-A, Ratlam Kothi,
Near Geeta Bhawan Square, Indore**